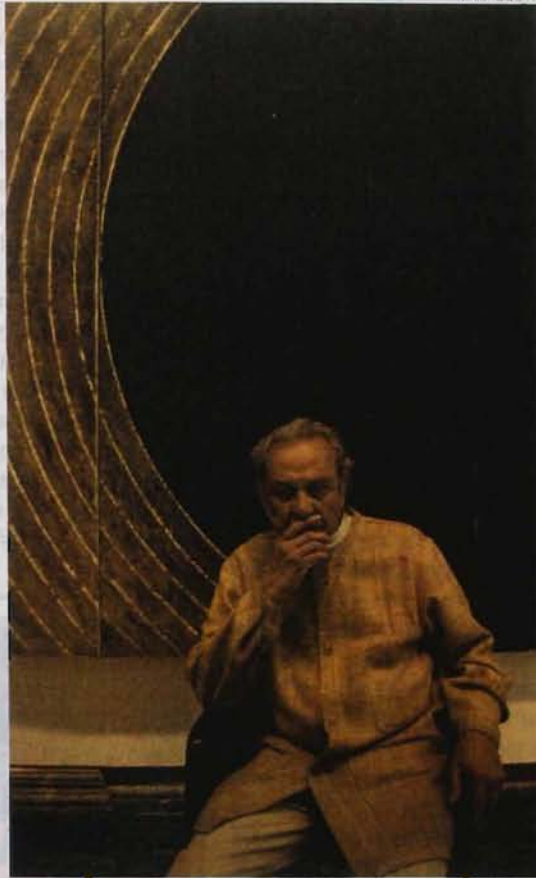


अनिवार्य तत्वों के अन्वेषण का प्रयास किया है। हालांकि ऐतिहासिक गतिविधियों और परिस्थितियों ने निश्चित रूप से उनके जीवन और कार्य को प्रभावित किया है, राजा ने अपनी कला को प्रत्यक्षतः उन्हें प्रतिबिम्बित करने की अनुमति नहीं दी है। यह सनातनता को संबोधित कला है जो ऐसी जगह खोजती है जहां काल का कोई महत्व नहीं रहता...। उनकी कृतियों पर उनके निर्माण की तिथियां हैं, फिर भी वे ऐतिहासिक कृतियां नहीं हैं। वे अपनी जीवंतता, तीव्र आवेग और काल्पनिकता में जीवित हैं क्योंकि राजा मनुष्य को समय के ऊपर देखते हैं। राजा के 80वें जन्मदिन के लिए लिखी गई कविता में मैंने महसूस किया, 'समय एक चिथड़ा है जिस पर तुम्हारे हाथों ने/ रंग पोंछे हैं।'

...खुले दरवाजे

दरवाजे खुले हैं। साथ ही कई खिड़कियां भी। रोशनी आती है। हम वह जगह देखते हैं: कई रास्ते दिखते हैं। आपको यह महसूस कराया जाता है कि कोई हड़बड़ी नहीं है। हमारे पास कला द्वारा सृजित इस स्थान को देर तक निहारने का समय है। वह प्रकाशित है, आप अधिक देखते हैं। यह मनन की जगह है; आप अधिक गंभीरता से सोचते हैं। आप एक चमकती और गुनने वाली ऊष्मा से घिरे हैं जो आपको दुनिया की खबरें देने का प्रयास नहीं करती... यह राजा के चित्रों की जगह है। यह केनवासों की सीमाओं से घिरा स्थान है फिर भी वह सभी सीमाओं से परे प्रतीत होता है। यह ऐसी जगह है जो आपको फिलहाल आजाद करती है। यह आपको व्यक्तिगत, सामाजिक और कलात्मक स्मृतियों को फिर से याद करने और उनसे गुंजायमान होने के लिए प्रेरित करता है। यह किसी शोरगुल में शामिल होने के लिए आपको प्रेरित नहीं करती बल्कि खुद को अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना में डूब जाने के लिए प्रेरित करती है जो दूसरों को सुनाई नहीं देती लेकिन आपको अपने हृदय की गहराइयों में स्पष्ट सुनाई देती है। अपने कलात्मक कैरियर की इस उन्नत अवस्था में, राजा एक ओर अत्यंत प्रत्यावर्ती मूड में अपने आरंभिक समय की ओर लौटते लगते हैं और दूसरी ओर शांति तथा अब तक प्रसुप्त ऊर्जा खोजते हैं। पुनरावृत्ति, कई सूक्ष्म भेदों के साथ, कुछ-कुछ किसी राग के समान है। आप बहुत चलते हैं और फिर भी उसी बिंदु पर लौटकर आते हैं। आपको शुरुआत में आपका अंत है। हालांकि कृतियों को ऐतिहासिक और व्यक्तिगत-ऐतिहासिक, दोनों प्रकार के संदर्भों में रखा जा सकता है, राजा के कार्य ने हमेशा समय को इतिहास की अपेक्षा सनातनता के संदर्भ में देखा है। वह अपने चित्रों में कविताओं, बुद्धिमत्तापूर्ण उक्तियों को शामिल करते हैं जैसे तत्त्वमसि, अप्स दीपो भव जिन्हें अपने वैदिक, उत्तर वैदिक, बौद्ध और आधुनिक इतिहास



छाया: गौरी गिल

राजा पूर्णता के किसी आयाम तक पहुंचने का प्रयास करते हैं, जीवन में उतना नहीं जितना कला में।

में तलाशा जा सकता है। राजा की कृतियों में वे इतिहास की छाप नहीं बल्कि सनातनता के अभिलेख लगते हैं, समयातीत द्वारा समय का अभिषेक।

राजा की कृतियों में समय आदि से आरंभ होता है। वह उद्गम के कवि हैं। आज के ऐतिहासिक रूप से कोलाहलपूर्ण और भ्रामक समय में उनके पास दीप, दर्शन, भूमि, शांति, कुंडलिनी, स्वप्न, अंकुरण जैसे इतने साधारण दिखने वाले लेकिन फिर भी अत्यंत जटिल विचारों को दिखाने का साहस और आत्मविश्वास है। उनकी कला हमें हमारे आदि घर की ओर वापस ले जाती है...।

विचार नहीं, समझदारी

राजा ने जतन से खुद को किसी भी सामाजिक या

राजनीतिक आंदोलन और साथ ही अपने काल की प्रभावशाली विचारधाराओं से दूर रखा है, चाहे वे फ्रांस में उभरी हों या भारत में। इस दूरी ने कभी-कभी इन आरोपों को हवा दी है कि एक कलाकार के रूप में वह सामाजिक और राजनीतिक विक्षोभों तथा परिवर्तनों में दिलचस्पी नहीं लेते और इसलिए मानव की स्थिति के प्रति संवेदनहीन हैं। हालांकि हमारे समय में कला तथा विचारधारा के बीच रिश्ता समस्यापरक रहा है, राजा मानते हैं कि कलाकार तथा व्यक्ति के रूप में मानवीय मूल्यों, इस युग में उनके असुरक्षित अस्तित्व और उनकी अभिपुष्टि की आवश्यकता ने उन्हें हमेशा प्रभावित किया है।... यह स्पष्ट है कि राजा की कलात्मक अंतर्दृष्टि सामाजिक-राजनीतिक विचारों पर कम, समझदारी पर अधिक आधारित है। वह मूल में जाती है, ऐतिहासिक महत्व की बजाय आदिम अंतर्दृष्टियों को अधिक अभिव्यक्त करती है...।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि राजा के मामले में जीवन और कला के बीच अंतर घटकर उस बिंदु तक आ गया है जिसे पूरी तरह समाप्त नहीं तो अदृश्य जरूर कहा जा सकता है। उनकी कला में मौजूद विशेषताएं जैसे ऊष्मा, उदारता, गहनता और गरिमा उनके जीवन तथा सामान्य व्यवहार में भी स्पष्ट हैं। जब राजा पूरी विनम्रता से दावा करते हैं कि वह केवल अपने जीवन के अनुभवों को चित्रों में उतार रहे हैं, तो इसमें पूरी सच्चाई होती है।

समा न पाने वाला विस्तार

रिल्के राजा के एक पसंदीदा कवि हैं। रिल्के की कई कविताएं मानो रोशनी डालती हैं कि राजा पेंटर और मनुष्य के तौर पर क्या करते हैं। धरती को लेकर राजा का फितूर पार्थिव के रिल्के के उत्सव से मिलता-जुलता है।...

राजा पूर्णता के किसी आयाम तक पहुंचने का प्रयास करते हैं, जीवन में उतना नहीं, जितना कला में। रिल्के ने कहा था: 'कला संपूर्णता की ओर बढ़ने की दीवानगी है। इसका नतीजा सिथतप्रज्ञता तथा पूर्णता का संतुलन है।'

अपनी बढ़ती आयु के बावजूद राजा की रचनात्मकता उतनी ही ताकत से जारी है। साथ ही उनकी मानवीयता भी, जो करुणा, दिव्यता और आभार में है। फिर से वह रिल्के की भावना गुंजित करते दिखते हैं:

*हम विश्राम के लिए तड़पें
खालिस मानवता के किसी छोटे-से टुकड़े में
नदी और चट्टान के बीच बागीचे की पट्टी
लेकिन हमारा दिल इतना विशाल है कि
वहां नहीं समा सकता*

राजा के लिए उनकी कला 'खालिस मानवता का एक छोटा टुकड़ा' रही है और फिर भी उनका हृदय इतना विशाल है कि वहां नहीं समा सकता। ●

स्मृतियों और बिसरी हुई हकीकतों और अंतर्दृष्टियों से गुंजायमान है। राजा आपसे कुछ अधिक बोलना नहीं चाहते बल्कि केवल आपको अस्तित्व की कोलाहल और शोरगुल भरी दुनिया में होने की याद दिलाना चाहते हैं। उनकी कृतियाँ दिल की गहराइयों में कैद और फिर भी उपस्थित, बिल्कुल बेदखल लेकिन फिर भी बेहद रचनात्मक, स्मृतियों की धीमे से याद दिलाने वाली हैं। यह समझदारी का दृश्य पुनर्वास है जो अपनी भाषा में भले ही पुरातन लगे लेकिन अपनी प्रासंगिकता और संरचना में बेहद समकालीन है। दृश्य ऐंद्रिकता से शाब्दिक को साकार करता है और कुछ कृतियों में स्पष्टतः शाब्दिक को पूरी तरह अपने आप में सिमटा देता है यानी दृश्य बना देता है। शाब्दिक और दृश्य के बीच मौन रहता है। हम यह ध्यान देने से खुद को रोक नहीं पाते कि यह मौन अत्यंत ध्यानमान है। लेकिन वह सवाल नहीं करता, आनंद मनाता है।...

राजा पूरी ताकत से दिव्यता, हमारे समय में दिव्यता की संभावना को चित्रित करते दिखते हैं। दिव्यता जो मौन में होती है, वह कार्यों या गणनाओं में नहीं बरसती, वह रंगों और ज्यामिति में बहती है। यह दिव्यता, एक संभावित दिव्यता का सदैव उपस्थित आभास ही इन चित्रों को एक प्रकार के आध्यात्मिक अभिलेख बना देता है। वे निर्देश नहीं देते बल्कि चुपचाप प्रेरित करते हैं। सिमोन वेल के शब्द याद आते हैं: 'आध्यात्मिक दासता आवश्यक को अच्छे से अलग न कर पाने में है क्योंकि 'हम नहीं जानते कि कौन-सा अंतर आवश्यक के सार को अच्छे के सार से अलग करता है।' राजा 'अस्तित्व की एक दैवी व्यवस्था' को याद दिलाने और फिर पहचानने के लिए हमें पीछे ले जाते हैं, जिसे हम भूल चुके हैं और फिर वेल के यादगार शब्दों में, 'हम यह महसूस नहीं कर पाते कि श्रम, कला और विज्ञान उसके साथ संपर्क करने के अलग-अलग तरीके मात्र हैं।'

राजा की कृतियों में प्रचंडता और नम्रता साथ-साथ दिखती है। उनकी कला गहरी विनम्रता में निहित अपार और अथक आवेग से भरी है। वह इनकार करते हैं कि वही व्यक्ति हैं जो चित्रकारी करता है। बहरहाल, वह जानते हैं कि अपनी अभिव्यक्ति के लिए दैवी को मानवीय की आवश्यकता होती है। वह प्रार्थना करते हैं और नई ऊर्जा तथा उत्साह का वर पाते हैं। यह संयोग नहीं कि उनके लंबे कैरियर के इस अंतिम चरण में उनके चित्र प्रार्थनाएं बन गए हैं। प्रकाशवान और खुद को संबोधित। हमसे दिखने की प्रतीक्षा में। हमें प्रेरित करते हुए कि हम उनमें अपनी वे आध्यात्मिक संपदाएं निवेशित करें जो कला हमें पहचानने में मदद करती है। हमें अपने में ही गहरे बसे और असंदिग्ध रहस्यों से विस्मित करते हुए। राजा के एक पसंदीदा कवि रैनर मारिया रिल्के इन शब्दों में *सॉनेट्स टु ऑर्फियस* समाप्त करते हैं:

जाओ,

और यदि सांसारिक धुंधला जाए और तुम्हें भूल जाए,
धरती के कानों में चुपचाप फुसफुसाओ: मैं बहता हूँ।
वेगवान जलप्रवाह से बोली: मैं हूँ।

हम कह सकते हैं कि राजा पूरी विनम्रता से पंचतत्वों

से कह रहे हैं - वह बह रहे हैं, वह हैं।

शास्वत को संबोधित

हर रंग, हर विग्रह

वहां शुरू होता है

जहां आंखें देखना बंद कर देती हैं।

यह दुनिया दिखती नोक भर है

एक ओझल विनाश की

कला और यथार्थ के संबंध की प्रकृति 20वीं शताब्दी के कई बहसों का केंद्र रही है। एक तरफ से देखें तो यथार्थ कला को भड़काता, पोषित और नियंत्रित करता है तो दूसरी दृष्टि से कला अपना ही यथार्थ रचती है जिसका तथाकथित यथार्थ से कुछ लेना-देना नहीं भी हो सकता है। बीच में यह भी जोर दिया गया है कि वस्तु-सापेक्ष या कलात्मक - कोई भी यथार्थ गठित किया जाता है। उसमें असंरचित या बिना मध्यस्थता के कुछ नहीं होता और कला की तरह यथार्थ भी मानव निर्मित होता है। जब आप राजा के बाद के चित्रों को देखते हैं, आप तत्काल कला की ऐंद्रिक उपस्थिति, स्मृतिकारक चमक, जटिल उत्कृष्टता से प्रभावित होते हैं जो लगभग तुरंत आपको उसके यथार्थ को समझने के लिए विवश करती है जो खुद यथार्थ से तत्काल अधिक यथार्थ होता है।... राजा के लिए कला कुछ नहीं है यदि वह रहस्य और विस्मय नहीं है। यह ऐसा है मानो राजा की कोई पेंटिंग एक उपस्थिति है जो एक बड़ी उपस्थिति की ओर इंगित करती है जो पेंटिंग के पीछे अपने ही जीवन में सांस लेती है।

रूसी कवि बोरिस पास्तरनाक की ये पंक्तियाँ एक चित्रकार के रूप में राजा की आस्था बता सकती हैं:

मैं हर चीज में गहना चाहता हूँ

निरा सार

काम में, रास्ते की तलाश में

भाववेग के विक्षोभ में

बोते दिनों का सार

और उनका आरंभ

नींव, जड़ें

बिल्कुल दिल

डोर पकड़ते हुए हमेशा

क्रियाओं, इतिहासों की

जीने, विचारने, महसूस करने, प्यार करने,

आविष्कार करने के लिए।

फिलिप जाकोटे

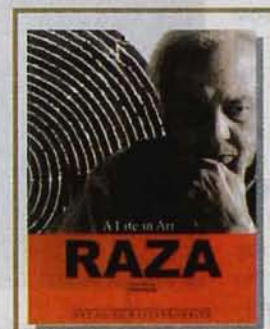
राजा कई वर्षों से ऐसी पेंटिंग्स बना रहे हैं जिन्हें उनके हृदय और कलात्मक दृष्टि के करीब कुछ विषयों की विभिन्न अभिव्यक्तियों की एक शृंखला माना जा सकता है। वह विषयों या अपने आप को दुहराते नहीं हैं लेकिन वह बार-बार उनकी ओर पलटते हैं। हर वापसी में कुछ सूक्ष्म नवीन तत्व होता है जो तेज नजर से बच नहीं सकता था। यह ज्ञात तथा पहले से उत्खनित क्षेत्र से एक अवशेष निकालने जैसा है जिस पर पहले ध्यान न गया हो। अदृश्य के करीब दृश्य। जो अब तक अदृश्य रहा है उसे दृश्य के क्षेत्र में लाना ही राजा की असली कलात्मकता है। ऐसी कलात्मक गतिविधि से मानव उद्यम हमेशा के लिए समृद्ध हो जाता है। मानवीय में अंततः दृश्य और अदृश्य एक हो जाते हैं, दोनों में से कोई भी अपने-आप में पूर्णता का दावेदार नहीं। अर्थ केवल दृश्य रूप में ही खुद को अभिव्यक्त कर सकता है: इसलिए रूपात्मकता अर्थपूर्ण के लिए महत्वपूर्ण है। राजा के लिए अर्थ का रूप के बिना अस्तित्व नहीं है। रूप में अर्थ निहित है।

...असीमित, प्रच्छन्न और व्यापक के साथ संपर्क राजा की कला को ऐसा आयाम देता है जिसे केवल आध्यात्मिक कहा जा सकता है। हालांकि इसमें कोई तथाकथित धार्मिक या कर्मकांडीय संकेतार्थ नहीं है। फिर भी यह ऐसी कला है जिसे प्रार्थना के रूप में क्रियान्वित किया गया है: दिव्यता और वरदान की याचना करते हुए और मानव आस्था के मूल्य और अर्थ को अभिपुष्ट करते हुए। मॉन्ड्रियन के अनुसार, यह प्रार्थना 'यथार्थ की सच्ची प्रकृति की अभिव्यक्ति गतिशील संतुलन' चाहती है। यह यथार्थ का अनुकरण करने वाली कला नहीं है: यह यथार्थ के सामने अपनी ही दबी हुई परतों, अपनी अनुपस्थितियों, अपने गहरे आश्चर्यों, अपने समृद्धिकारी रहस्यों को उजागर करने वाली कला है। राजा की कला भौतिक विश्व को एक ब्रह्मांड के स्तर तक उठा देती है जिसमें धरती आकाश से मिल जाती है।

...राजा की कृतियों में ऐसा लगता है मानो प्रत्येक रंग को कैनवास पर उसकी उपयुक्त जगह दे दी गई है।

राजा की कृतियों में ऐसा लगता है मानो प्रत्येक रंग को कैनवास पर उसकी उपयुक्त जगह दे दी गई है और फिर भी वह दूसरे रंगों से सामंजस्य बिठाते हुए एक-दूसरे से जुड़े आपस में संगत रंगों तथा आकारों का सृजन करता है।

...मानव हर काल में समय और सनातनता के बीच फंसा रहा है। राजा की कला सामाजिक-राजनीतिक काल से बहुत जुड़ी नहीं रही है। फिर भी उसने अपनी अद्वितीय चित्रात्मक भाषा और अपना विशिष्ट मुहावरा विकसित करते हुए जीवन, प्रकृति और नियति में



**राजा की कृतियों में
ऐसा लगता है मानो
प्रत्येक रंग को
कैनवास पर उसकी
उपयुक्त जगह दे
दी गई है।**

मध्य प्रदेश के बावरिया गांव में 1922 में जन्मे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के भारतीय चित्रकार सैयद हैदर रजा 1950 से पेरिस में बसे हैं। इस 22 फरवरी को जीवन के 85 वर्ष पूरे करने वाले रजा का जन्मदिन धूमधाम से मनाया जा रहा है और इसके तहत दिल्ली में 'स्वस्ति' नाम से सप्ताह भर का आयोजन किया जा रहा है। बाइस फरवरी से 28 फरवरी के इस आयोजन में उनके कुछ चुनिंदा चित्रों की प्रदर्शनी के अलावा कविता, संगीत, नृत्य और विचार आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। इसी दौरान लोकार्पित होने वाली रजा पर लिखी गई कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी की पुस्तक रजा: अ लाइफ इन आर्ट के अध्याय की अनएंडिंग के कुछ अंश हम यहां दे रहे हैं। यह पुस्तक रजा के लंबे जीवन और उनके समृद्ध चित्रकला कैरियर के विभिन्न पहलुओं को सामने लाती है।

छाया: त्रिभुवन तिवारी

हम विश्राम के लिए तड़पें
खालिस मानवता के किसी छोटे-से टुकड़े में

रिल्के

वे धीरे-धीरे मौन नहीं हुए हैं। वे गहरी नीरवता में जन्मे थे, लगभग प्रार्थना में, जहां मौन इतनी सौम्यता से अनिवर्चनीय को स्पर्श करता है मानो वह उसके अत्यंत करीब हो। लगभग आधी शताब्दी के बाद यह कुछ विरोधाभासी है कि रजा कई जटिल रूपों में सरल मानवीय सच्चाई को हम तक पहुंचा रहे हैं: 'मेरे पास कहने को कुछ नहीं है। मैं आपको मौन का साथी बनाना चाहता हूँ।' यह सार तत्वों का मौन है; ऐसा मौन जो

प्रवाह,

में हूं

